Part I HOL'
P— I (B)

ह्वेनसांग का भारत वर्णन।
अथवा
ह्वेनसांग कौन था ?

ह्वेन सांग एक चीनी यात्री था। उसका जन्म चीन में होनान-फू के समीप एक नगर में हुआ था। अपने भाई की तरह वौद्ध भिक्षु होकर वह चीनी शासक की अनुमति से बौद्ध धर्म साहित्य के अध्ययन के लिए हर्ष के राज्यकाल में भारत आया। वह मध्य एशिया के स्थलमार्ग द्वारा रैवर के दर्रे 629 ई० में भारत आया। चौदह वर्षों तक भारत में रहा और भारत के विभिन्न स्थलों की यात्रा की। उसने नालंदा में धर्म दर्शन का अध्ययन किया। भगवान बुद्ध के स्मृति चिह्नों और चित्रों और मूर्तियों के अतिरिक्त 657 संस्कृत ग्रंथों के साथ स्वदेश लौटा।

ह्वेनसांग का भारत वर्णन – ह्वेनसांग का वर्णन हर्षकालीन राजनीतिक, सामाजिक आदि अवस्थाओं पर बड़ा सुन्दर प्रकाश डालता है। ऐतिहासिक दृष्टियों से वर्णन का अपना महत्व है।

राजनीतिक स्थिति — ह्वेनसांग लिखता है (2)
कि सम्राट हर्ष का शासन प्रबन्ध अत्यंत
सुव्यवस्थित था। राजा स्वयं कर्तव्यपरायण
दयालु, उदार और धार्मिक व्यक्ति था,
प्रजा की भलाई की चिंता उसे थी और
राज्य में घूम-घूम कर प्रजाहित के
कार्यों का निरीक्षण करता था। प्रजा
की उपेक्षा का ध्यान रखता था अतः
प्रजा सुखी और सम्पन्न थी। कर
का बोझ प्रजा पर कम था उपज का
छठा भाग भूमि कर के रूप में
लिया जाता था। प्राप्त राजस्व क्रमशः
राजकार्य, वेतन, विद्या, कला विज्ञान
पुण्यादि तथा धार्मिक कार्यों पर व्यय
होता था। सड़के सुन्दर और चौड़ी
थीं। सड़क के दोनो किनारे वृक्ष लगे
हुए थे। यद्यपि सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था
थी, फिर भी चोरी-डकैती के अपराध
होते थे। दण्डविधान कठोर था। व्यापार
उन्नत थी। सेना हाथी, घोड़े, रथ और
पैदल चार भागो मे सेना विभक्त

Scanned with CamScanner

थी। पुराने नगरों — पाटलिपुत्र, कपिल-
वस्तु, मथुरा आदि की समृद्धि
क्षीण हो रही थी। किन्तु, कन्नौज
थानेश्वर आदि नगर समुन्नत स्थिति
में थे।
सामाजिक स्थिति → ह्वेनसांग के
अनुसार लोगों की सामाजिक स्थिति
सामान्यतया संतोषजनक थी। लोग
सत्यनिष्ठ, ईमानदार, सरल तथा
सीधे - सादे होते थे। जाति - व्यवस्था
के बन्धन जटिल हो गये थे और
छुआछूत में विश्वास होने लग
गया था। लोगों का जीवन सदाचार-
पूर्ण था। भोजन भी सादा था।
प्याज, लहसुन, शराब मांस इत्यादि
का प्रयोग निम्नश्रेणी के लोग
करते थे। शारीरिक और मानसिक

Scanned with CamScanner

शुद्धता पर विशेष ध्यान देते थे। अन्तर्जातीय विवाह की प्रथा नहीं थी। पर्दा-प्रथा एवं विधवा-विवाह का भी प्रचलन नहीं था। स्त्रियों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था। सामान्यतया लोग स्वच्छ वस्त्र और रंग-बिरंगे कपड़े पहनते थे। लकड़ी तथा मिट्टी के बरतनों में केवल एक बार भोजन किया जाता था। लोग प्रायः सिलाई-रहित वस्त्र पहनते थे। स्त्री-पुरुष दोनों शृंगारप्रिय थे। लोग अंगूठी, हार, कंगन माला इत्यादि पहनते थे। स्त्रियाँ विविध प्रकार के शृंगार करती थीं। शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। भाषा संस्कृत थी। सन्यासियों भिक्षुओं और तपस्वियों का बड़ा सम्मान होता था।

Scanned with CamScanner